M.A. Sem-II
CC-6

Class by - Dr Manisha Kumari

पूँजी निर्माण एवं आर्थिक विकास

Capital formation & Economics Growth

* पूँजी → पूँजी का अर्थ है भौतिक (अभौतिक) पुन: निर्मित उत्पादन के साधन का स्टॉक।

* पूँजी निर्माण (Capital formation) →
वर्तमान उत्पादन को उपभोग न करके उसका जो भाग मशीनों, औजारों, उपकरणों आदि का उत्पादन करने के लिए लगाया जाता है, वह पूँजी-निर्माण कहलाता है।

रैगनर नर्क्स के अनुसार - "The meaning of capital formation is that the society does not apply the whale of its current activity to the needs and desires of immediate consumptions, but directs apart of it to the making of capital goods: tools and instruments machines and transport facilities, plant and equipment" पूँजी निर्माण का अर्थ है कि समाज अपनी समस्त वर्तमान क्रिया को आवश्यकताओं एवं इच्छाओं के तत्कालिक उपभोग पर लागू नहीं करता बल्कि इसके एक भाग को पूँजीगत वस्तुओं - औजारों व उपकरणों, मशीनों एवं परिवहन सुविधाओं, प्लांट तथा संयंत्रों - के निर्माण में लगा देता है।"

जैसे- भौतिक वस्तुएं - प्लांट, औजार, मशीन

अभौतिक वस्तुएं — स्वास्थ्य, अन्वेषण, वैज्ञानिक शो
शिक्षा का उच्च स्तर इत्यादि।

आर्थिक विकास की प्रक्रिया में पूँजी-निर्माण का महत्वपूर्ण स्थान है जिन्हें निम्नांकित बिन्दुओं द्वारा समझ सकते हैं। →

(I) दरिद्रता के कुचक्र दूर करने के लिए (To Remove vicio circles of poverty) →
अल्पविकसित देशों में दरिद्रता के कुचक्रों को पूँजी निर्माण द्वारा ही समाप्त किया जा सकता है। पूँजी के द्वारा उत्पादन के पैमाने में वृद्धि करके एवं सामाजिक एवं आर्थिक उपरि-सुविधाओं का निर्माण होता है। जिससे राष्ट्रीय उत्पादन, आय तथा रोजगार के आकार में वृद्धि होती है।

(II) आधारभूत संरचना का निर्माण → स्कूलों, अस्पताल सड़कों, रेलमार्ग, संचार सुविधाओं के विकास पूँजी के द्वारा करके आर्थिक विकास में वृद्धि किया जाता है।

(III) श्रम को लाभ (Labour benefits) → पूँजी निर्माण द्वारा तकनीकी प्रशिक्षण आदि सुविधाओं द्वारा विशिष्टीकरण करके श्रम-शक्ति को बढ़ाया जाता है।

(IV) मार्केट का विस्तार (Expansion of market) →
पूँजी निर्माण से मार्केट विस्तार होता है क्योंकि पूँजी निर्माण से उत्पादन, रोजगार तथा आय में वृद्धि होती है। माँग में वृद्धि, पूर्ति की वृद्धि करती है एवं मार्केट का विस्तार होता है।

(Development with increasing population)

(v) बढ़ती हुई जनसंख्या के साथ विकास → बढ़ती हुई जनसंख्या, पूँजी-श्रम अनुपात को प्रभावित करता है। अतः जब जनसंख्या तेजी के साथ बढ़ रही है तो इच्छित निवेश की मात्रा के लिए पर्याप्त बचत नहीं हो पाता है। अतः पूँजी निर्माण के लिए बचत को प्रोत्साहित करके निवेश को बढ़ाना आवश्यक होता है।

(vi) भुगतान-शेष का हल (Solution of balance of payments) → कोई भी देश जब प्राथमिक वस्तुओं का निर्यात करता है एवं निर्मित तथा अर्द्ध-निर्मित वस्तुओं का आयात करता है तब इस स्थिति में भुगतान संतुलन असंतुलित हो जाता है। पूँजी निर्माण (घरेलू) द्वारा अपने साधनों का विकास करके आयात प्रतिस्थापन किया जा सकता है। दूसरी ओर पूँजी निर्माण के द्वारा उपभोक्ता एवं पूँजीगत वस्तुओं के उत्पादन में वृद्धि करके निर्मित वस्तुओं का निर्यात किया जा सकता है जिससे भुगतान-शेष की समस्या को हल किया जा सकता है।

(vii) विदेशी सहायता से मुक्ति (Freedom from foreign aid) → जब विदेश से ऋण लिया जाता है तब कर-भार अधिक हो जाता है। देश की राष्ट्रीय आय का अधिकतर भाग ब्याज भुगतान पर चला जाता है जिससे दीर्घकाल में विकास पर दुष्प्रभाव पड़ता है। इसलिए घरेलू पूँजी निर्माण अधिक करके इस समस्या से छुटकारा पाया जा सकता है।

(viii) स्फीति रोकने में (In controlling inflation) → पूँजी निर्माण की दर में सतत वृद्धि वस्तुओं की पूर्ति में वृद्धि करती है। दूसरी ओर पूँजी निर्माण से उत्पादन एवं रोजगार में वृद्धि से आय में वृद्धि से माँग में भी वृद्धि होता है। जिससे स्फीति पर नियन्त्रण किया जा सकता है।

(ix) आर्थिक कल्याण में वृद्धि —